पदों का भावार्थ

पाठ 1 - पद (सूरदास) कक्षा 10

हिंदी अ क्षितिज - पद्य खंड

पहला पद

उधो, तुम हो अति बड़भागी ।
अपरस रहत सनेह तंगां तैं, नाहिन मन अनुरागी ।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी ।
ज्यों जल माई तेल की गागरी, बूँद न ताकों लागी ।
प्रीति-नदी में पाँउ न बोरयो, दृष्टि न रूप परागी ।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चोटी ज्यों पानी ।।

भावार्थ

गोपियाँ व्यंग्य करते हुए उद्धव से कहती हैं कि हे उद्धव! तुम बहुत भाग्यवान हो, जो अभी तक श्रीकृष्ण के साथ रहते हुए भी उनके प्रेम के बंधन से अछूते हो और न ही तुम्हारे मन में श्रीकृष्ण के प्रति प्रेमभाव उत्पन्न हुआ है। गोपियाँ उद्धव की तुलना कमल के पत्तों व तेल के गागर से करते हुए कहती हैं कि जिस प्रकार कमल के पत्ते हमेशा जल में ही रहते हैं, लेकिन उन पर जल के कारण कोई दाग दिखाई नहीं देता अर्थात वे जल के प्रभाव से निलिप्त होती हैं। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार तेल से भरी हुई मटकी पानी के मध्य में रहने पर भी उसमें रखा हुआ तेल पानी के प्रभाव से प्रभावित रहता है, उसी प्रकार श्रीकृष्ण के साथ रहने पर भी तुम्हारे ऊपर उनके प्रेम तत्व का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। आगे वे कहती हैं कि तुमने प्रेम रूपी नदी में कभी पाँव नही डुबोया है और न ही तुम्हारी दृष्टि कृष्ण के रूप-सौंदर्य पर मधुर हुई, लेकिन हे उद्धव! हम तो भोली-आली अबलाएँ हैं, हमें तो तुम्हारी तरह कोई ज्ञान नहीं हैं। जिस प्रकार छोटी! गुरु से चिपक जाती हैं, ठीक उसी प्रकार हम भी श्रीकृष्ण के प्रेम में उलझा (लिपट) गई हैं।

दूसरा पद

मन की मन ही माँझा रही।
कहिंर जाइ कोने पै ऊधौं, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेशनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुँती गुहारी जितहिंहें तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यों, मरजादा न लही।

भावार्थ

गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हमारे मन की अभिलाषाएँ हमारे मन में ही रह गई, क्योंकि हम श्रीकृष्ण से यह कह नहीं पाई कि हम उनसे प्रेम करती हैं। हे उद्धव! अब तुम ही बताओ हम अपनी यह व्यथा किसे जाकर कहें? अब तक उनके आने की आशा ही हमारे जीने का आधार थी। उसी आशा के आधार पर हमने अपने तन-मन के दु:खों को सहन किया था। अब उनके दूरा भेजे गए जोग अर्थात् योग के संदेश को सुनकर हम विरह की ज्वाला में जल रही हैं। हम जहाँ से भी श्रीकृष्ण के विरह की ज्वाला से अपनी रक्षा करने के लिए सहारा चाह रही थीं, उधर से ही योग की धारा बहती चली आ रही हैं। सूरदास गोपियों के माध्यम से कह रहे हैं-अब जब श्रीकृष्ण ने ही सभी मर्यादाओं का त्याग कर दिया, तो भला हम धैर्य धारण कैसे कर सकती हैं ?

Online Teaching With Nikita

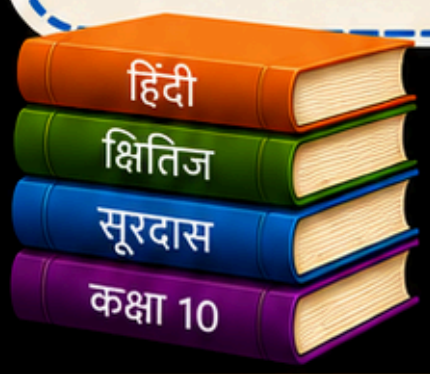

तीसरा पद

तीसरा पद

हमार हरि हारिल की लकड़ी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह हठ करि पकड़ी ।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी।
सुनत जोग लागत है ऐसे, ज्यों ककड़ी ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकों ले आए, देखि सुनी न करी।
यह तो 'सूर' तिनहि ले सौंपो, जिनके मन चकरी।।

भावार्थ

गोपियों उद्धव से कहती हैं कि हमारे श्रीकृष्ण तो हमारे लिए हारिल पक्षी की लकड़ी के समान हैं। जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने पैरों में दवाई लकड़ी को नहीं छोड़ता, उसी प्रकार हमने भी मन, वचन और कर्म से श्रीकृष्ण को हृदयापूर्वक अपने हृदय में बसाया हुआ है। हम तो जागते-सोते, सपने में और दिन-रात कान्हा-कान्हा रटती रहती हैं। हमें तो जोग का नाम सुनते ही ऐसा लगता है, जैसे मुँह में ककड़ी ककड़ी चली गई हो। योग रूपी जिस बीमारी को तुम हमारे लिए लाए हो, उसे हमने न तो पहले कभी देखा है, न उसके बारे में सुना है और न ही इसका कभी व्यवहार करके देखा है। सूरदास गोपियों के माध्यम से कहते हैं कि इस जोग को तो तुम उन्हीं को जाकर सौंप दो, जिनका मन चकरी के समान चंचल है। हमारा मन तो स्थिर है, वह तो सदैव श्रीकृष्ण के प्रेम में ही रमा रहता है।

Online Teaching With Nikita

चौथा पद

चौथा पद

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।
इक अति चतुर होते पहिलै ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बड़ी बुद्धि जानीं जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।
ऊधौं भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।
अब अपनै मन फेर पाइहैं, चनत जु होते चुराए।
ते क्यों अनीति करें आपुण, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तो यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहि सताए।।

भावार्थ

गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हम तुम्हारी बातें सुनकर ही श्रीकृष्ण के मंतव्य को समझ गए थे। गोपियाँ व्यंग्यपूर्वक उद्धव से कहती हैं कि श्रीकृष्ण पहले से ही बहुत चतुर चालाक थे, अब मधुरा पहुँचकर शायद उन्होंने राजनीति शास्त्र भी पढ़ लिया हैं, जिससे वे और अधिक बुद्धिमान हो गए हैं, जो उन्होंने तुम्हारे द्वारा जोग (योग) का संदेश भेजा है। हे उद्धव! पहले के लोग बहुत भले थे, जो दूसरों की भलाई करने के लिए दौड़ चले आते थे। अब श्रीकृष्ण बदल गए हैं। गोपियाँ कहती हैं कि वे मधुरा जाते समय हमारा मन अपने साथ ले गए थे, अब हमें वो वापस चाहिए। वे तो दूसरों को अन्याय से बचाते हैं, फिर हमारे लिए योग का संदेश भेजकर हम पर अन्याय क्यों कर रहे हैं? सूरदास के शब्दों में गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव! राजधर्म तो यही कहता है कि प्रजा के साथ अन्याय नहीं करना चाहिए और न ही सताना चाहिए। इसलिए कृष्ण को योग का संदेश वापस लेकर स्वयं दर्शन के लिए आना चाहिए।